* 'बापू' शीर्षक कविता का सारांश लिखें।
अथवा
'बापू' कविता में आए दिनकर के विचारों पर विचार करें।

उत्तर ⇒ ★ भूमिका :-

हिन्दी साहित्य के इतिहास में किसी भी वाद में नहीं बंधने वाले कवि रामधारी सिंह 'दिनकर' हैं, जिन्हें राग एवं आग के कवि के रूप में हम जानते हैं। इनकी लेखनी समाज एवं राष्ट्र के हित में होती है। इन्होंने भारत की जनता के हृदय में प्रेम, सहानुभूति राष्ट्रभक्ति आदि जगाने का ~~किय~~ काम किया है।

'बापू' कविता के रचनाकार राष्ट्रकवि रामधारी सिंह 'दिनकर' हैं जिन्होंने इस कविता के माध्यम से महात्मा गाँधी के भक्तिमय चरित्र, विचारधारा, सिद्धांत एवं युगीन परिस्थिति को दर्शाया है। इस समय की स्थिति एवं वर्तमान स्थिति के बीच आए परिवर्तन को दिखाया है। समाज में गाँधी जैसे व्यक्तित्व के साथ-साथ परिस्थिति के अनुकूल रूप परिवर्तन लाने के लिए ऐसे चरित्र को स्थापित करना चाहिते हैं जो समाज में सामंजस्य स्थापित कर सकता हो सके।

★ सारांश :-

इस कविता के माध्यम से कवि ने राष्ट्रपिता महात्मा गाँधी के व्यक्तित्व एवं इस समय की विकट स्थिति से हम पाठकों को रूबरू कराना चाहते हैं।

AUGUST'22

SU	MO	TU	WE	TH	FR	SA
	1	2	3	4	5	6
7	8	9	10	11	12	13
14	15	16	17	18	19	20
21	22	23	24	25	26	27
28	29	30	31			

200-165

2022 JULY 19 TUE

इस समय की परिस्थिति से लड़ने वाले महान महात्मा गाँधी को सम्बोधित करते हुए कहते हैं कि हे बापू! आप जिस दौर से गुजरे है, मैं भी इसी समय का मानव आज हूँ। जिस समय भारतवर्ष की जनता स्वतंत्रता प्राप्ति के लिए तड़प रही थी, ऐसे समय में तूने उनके हृदय में आशा एवं शांति की किरण दिखलाई। अपने सत्य और अहिंसा के बल पर तूने सम्पूर्ण विश्व में एक छवि स्थापित की। इसके निर्माण में तुम्हें न जाने कितने ही संघर्षों का सामना करना पड़ा परंतु आपने हिम्मत नहीं हारी।

यहाँ पर बापू को कई उपमाओं से सुशोभित करते नजर आता है। कभी गाँधी जी के कृत कर्मों से समाज होते हैं तो कभी प्रेम उमड़ता दिखाई पड़ता है। कवि बापू को सूर्य के समान स्थापित करते हैं। जिस पर सूर्य के उदय होते ही दिनभर का अँधेरा हमेशा के लिए समाप्त हो जाता है ठीक इसी प्रकार बापू आप कभी न अस्त होने वाले सूर्य की भाँति हैं जिनकी आशा से संसार के लोगों में आशा, विश्वास और श्रद्धा जाग उठी है। परंतु आपकी आशा हमेशा हमेशा तो नहीं रहेगी लेकिन आपका प्रभाव युग-युग तक बना रहेगा। इसी क्रम में दिनकर श्रद्धांजली देते हुए कहते हैं—

"तू कालोदधि का महास्तंभ
आत्मा के नभ का ध्रुव केतु,
बापू! तू मर्त्य - अमर्त्य,
स्वर्ग - पृथ्वी, भू - नभ का महासेतु।

Contentment is natural wealth, luxury is artificial poverty. - Socrates,

तेरा विराट यह रूप कल्पना,
पट पर नहीं समाता है,
जितना कुछ कहूँ, मगर कहने को
शेष बहुत रह जाता है।"

हे बापू! तुम्हारा यह विराट व्यक्तित्व बहुत ही महान है। तू समय की धारा को भी मोड़ देने वाले हो। तुम्हारी यह छवि हमारे हृदय पटल पर सामने से भी नहीं समा रही है। कल्पना के द्वारा भी इसे समेटना मुश्किल ही लगता है। तुम्हारे बारे में जितना भी कहा जाए सब कम ही लगता है। जितना भी कहा जाता है फिर भी उसमें शेष बहुत रह जाता है। अर्थात् आपका व्यक्तित्व इतना विशाल है कि उसे सहेजना कठिन हो जाता है।

कवि ने बापू को राष्ट्र का कर्णधार कहा है तो कभी क्रोधित होकर राष्ट्र व समाज के विपरीत चलने वाला कह दिया है। आज तुम्हारे सामने माथे पर लगने वाला अंगार तिलक भी लज्जित महसूस कर रहा है। तुम्हारा स्वरूप इतना विशाल है कि मैं तुम्हें छूना भी चाहूँ तो असमर्थ ही लगता है।

निष्कर्ष :-

इस प्रकार कवि दिनकर ने बापू के महान रूप को अमर किया है। कहते हैं- हे वामन! तुम्हारी इस विराट छवि से हमारे राष्ट्र में नई ऊर्जा का संचार किया है। जिसे युगों-युगों तक याद किया जायेगा और आपके जैसा बनना अब किसी के वश की बात नहीं है।